वितण्डा

कथा (बे पक्षो वच्चेनी चर्चा) ना त्रण प्रकार न्याय सूत्रकारे गणाव्याछे-वाद, जल्प, अने वितण्डा । वादना अधिकारी वीतराग होय छे, तेओ सत्यनिर्णयार्थ वादकरे छे, हार-जीतनो सवाल तेमने मन खास महत्वनो नथी । वादमां पक्ष अनेप्रति-पक्ष सामसामा रजू करवा मां आवे छे अने प्रमाण अने तर्क तेमां छल, जाति अने निग्रह स्थान जेवी युक्तिओनो उपयोग थायतो पण समान पणे तो नहीं ज (प्रमाण तर्कसाधनोपालम्भः सिद्धान्तविरुद्धः पञ्चावयवोपपन्नः पक्ष प्रतिपक्षपरिग्रहो वादःन्यायसूत्र १--२--१) जल्पनी पद्धति पण वाद जेवीज छे, तेमां पण प्रमाण अने तर्क द्वारा स्वपक्षनुं खंडन करवानो प्रयत्न करवामां आवे छे; पण तेमां विरोधीनो पराभव करवानुं मुख्य प्रयोजन होइ छल, जाति अने निग्रह स्थाननो समान पणे उपयोग थाय छे । (यथोक्तोपपन्नछलजातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भी जल्पः—न्यायसूत्र १-२-२) तेज जल्प प्रतिपक्षनी स्थापना विनानो होय तो वितण्डा बने छे । ज्यारे चर्चा मां उतरेलो एक-वादी पोताना मतनुं स्थापन करतो ज नथी, मात्र प्रतिवादीना मतनुं खंडन खंडन करया करे छे त्यारे ते वितण्डा करे छे एम कहेवाय छे (स प्रतिपक्ष स्थापनाहीनो वितण्डा—न्यायसूत्र १-२-३) । आना पर भाष्य करतां वात्स्यायन स्पष्टता करे छे के वैताण्डिकने पण पोतानोपक्ष तो होय ज छे, केवल ते तेनुं स्थापन करवा प्रवृत्तथतोनथी अने थेती ज सूत्रकारे वितण्डा प्रतिपक्षहीन छे एम न कहे तां प्रतिपक्षस्थापनाहीन छे एम कह्युं छे । उद्धोतकर अने वाचस्पति पण संमत तथा स्पष्टता करे छे के आमां वैताण्डिक नो एवो आशय होय छे के विरोधीना मत के पक्षनुं खंडन करवाथी पोतानो पक्ष पोतानी मेले सिद्ध थइ जशे; वैताण्डिकनो पोतानो पक्ष होय ज छे पण तेनुं प्रतिपक्षना खंडन थी स्वतन्त्रपणे स्थापन करवामां आवतुं न थी ।

उद्द्योतकरे एक मत नोंध्यो छे जे प्रमाणे वितण्डानुं लक्षण 'दूषण मात्र' हतुं । उद्द्योत करे आको प्रतिषेध करचो छे कारण के वैताण्डिकने पण जेनुं खंडन करवानुं छे ते पक्ष, अे पक्षनी विपर्य-यात्मकता, प्रतिवादी अने वादी तरीके पोते आटली हकीकतो तो स्वीकारवीज रही अने दूषणमात्र एटलुं लक्षण होय तो आनी उपपत्ति थती न थी । (जुओ न्यायवार्तिक, पृ. १६३; तात्पर्य टीका, पृ. ३३०) । पण चरक संहिता (पृ. २२५) मां पण वितण्डानुं 'परपक्षे दोषवचनमात्रमेव' एवुं लक्षण आप्युं छे तेथी एम कही शकाय के वितण्डा अे दूषण मात्र जे एवी परंपरा होवी जोइअे ।

वितण्डाति पद्धतिनो जेमां उपयोग करवामां आव्यो छे तेवा ग्रन्थी नो अभ्यास करतां जणाय छे के आ वैताण्डिको केवल दोषदर्शी नथी पण सूक्ष्म विचारक छे जेमने कोई ज्ञाननुं प्रामाण्य मान्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नथी अने तेथी तेमने पोतानो कोई मत के वाद न थी । विरोधीनुं खंडन करतां जा दलीलीनो अे उपयोग करे छे तेमांम कदाच कोई जूदा मत के पक्षनो सीधो के आडकतरो स्वीकार थतो होय तो पण आ वैतान्डिकने अभिप्रेत तो न थी ज । कोई आमतनी स्थापना करवा प्रवृत्त थाय तो अेज वैताण्डिक अेनुं खंडन करवा तत्पर बने अने त्यारे अे अेनाथी विरुद्ध मतनो स्वीकार करतो जणाय । जयराशिभट्टनां तत्वोपप्लवसिंह पर दृष्टिपात करतां आ सहेजे समजाय छे । सत्कार्य वादनुं खंडन करता वैताण्डिकने असत्कार्यवाद मान्य छे अेम लागे पण अेज वैताण्डिक असत्कार्य वादनुं पण खंडन करे छे, अनेत्यारे तेने सत्कार्यवाद मान्य होय अेवुं लागे छे । वास्तवमां तेने अेक पण मान्य नथी अने प्रतीत्य समुत्पाद के विवर्त-वाद के कोई पणवाद मान्य न थी । तेने प्रमाणिक पणे अेम लागे छे के कोई ज्ञान ने प्रमाण भूत मानी शकाय तेम न थी । तेथी कोई वाद ते शी रीते स्थायी शके के स्वीकारी शके ! प्रमेयनी स्थापना प्रमाण पर आधारित छे अने प्रमाणनुं साचुं लक्षण आपी शकाय तो ज प्रमाणनी स्थापना थई शके पण प्रमाणनुं कोई पण लक्षण दोष रहित (—तर्कशास्त्रने मान्य सिद्धान्तो प्रमाणे पण) जणातुं नथी तेथी प्रमेयनी स्थापना शक्य बनतो न थी । आ संजोग मां परम तत्व अंगे के बीजुं पण कशुं कहेवुं शक्य न थी । बधां लौकिक अने शास्त्रीय व्यवहार अविचारित रमणीय चाले छे [सल्लक्षणनिबंधनं मानव्यवस्थानम्, मान-निबन्धना च मेयस्थितिः, तदभावे तयोः सद्व्यवहार विषयत्वं कथं [स्वयमेव]····—तत्त्वोपप्लवसिंह, पृ. १; तदेवमुपप्लुतेष्वेव तत्त्वेषु अविचारित-रमणीया सर्वेव्यवहारा घटन्ते—पृ. १२५

वितण्डा-पद्धतिनो स्वीकार संजय वेलट्ठिपुत्र (बुद्धना समकालीन), जयराशिभट्ट (८वीं सदी), माध्यमिको अने श्रीहर्ष (१२वीं सदी) जेवा अद्वैत वेदान्तीओनी विचार-सरणि अने प्रतिपादन मां जोवा मले छे, आ लोको केवल दोषदर्शी हता अने सूक्ष्म विचारक न होता अेम तो कोई कही शके तेम नथी । तेथी आपणे मानवा प्रेराईसे छीअे के वितण्डानुं प्रतिपादन जे रीते न्याय-ग्रंथोमां करवामां आव्युं छे ते पूरतुं नथी अने उद्द्योतकर, वाचस्पति बगेरे अे वितण्डानुं साचुं रहस्य पकडयुं न थी । जयंत जेवा पासेथी यहा आ परत्वे बधारे विवरण प्राप्त थतुं न थी । पण उदयने (१०वीं सदी) पोतानी परिशुद्धि मां सानातनिना मतनो उल्लेख करयो छे जे प्रमाणे कथा चतुर्विध छे कारण के वितण्डा बे प्रकारनी छे—तेमांवाद के जल्पनां लक्षणो होय अे अनुसार । [प्रौढगौड नैयायिक मते चतस्त्रः कथाः । 'स प्रतिपक्ष स्थापनाहीनो वितण्डा' (न्यायसूत्र १-२-३) इत्यत्र जल्पवद् वादस्यापि परामर्शात् । पुरुषाभिप्रायानुरोधेन चतुर्थीदाहरणस्यापि उपपत्तेरीति सानातनिः—परिशुद्धि १. २. १—History of Navya Nyaya in Mithila, P. 1 —दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, दरभंगा, १९५८—मां थी उद्धृत) । शंकर मिश्रे (१६वीं सदी) पण वादि विनोद (पृ. २) मां आ मत नो उल्लेख करयो छे । सानातनिने मते वादी वादनां लक्षण जेमां छे तेथी कथा (चर्चा) मां पोताना कोई पक्षनुं स्थापन करया विना पर पक्षनुं खंडन मात्र करे अे शक्य छे ज । न्याय परिशुद्धिमां वेंकटनाथे (१३वीं सदी) पण वितण्डानां बे प्रकार छे—वादी वीतराग के विजिगीषु होय अे प्रमाणे—तेवा मत नो उल्लेख करयो छे, जो के वेंकटनाथ पोते आ मतनी साथे संमत थता नथी कारण के सत्यनिर्णयनी अंखना बालो वीतराग प्रतिपक्षना खंडन मात्र थी संतुष्ट न ज थाय । तेने तो जेने अंगे चर्चा थई रही छे अे वस्तुना स्वरूपनो प्रतीति इष्ट छे (के चित्तु, वितण्डायामपि वीतराग-विजिगीषुभेदाद् भेदमाहुः—न्यायपरिशुद्धि, पृ. १६६) । दूषणमात्रं वितण्डा, परपक्षे दोषवचनमात्रमेव—अे लक्षणो तो आपणे जोयां ज छे । तेथी अेवुं मानवानी प्रेरणा थाय छे के आवा लक्षणो प्राचीन काल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की मलतां होय अने बीजु बाजुअे वितण्डा पद्धति थी प्रवृत्त थनार उच्च कक्षानां चिन्तकोना ग्रंथों ज्ञेय तो बधा वैताण्डिक केवल दोषदर्शी न होइ शके । तेमने बीजो पण अेक प्रकार होवो जोइअे—सूक्ष्म विचारक (Critical Philosophers) कही शकाय तेवा ओनो । वीतराग वैताण्डिक तत्त्वोपप्लववादी चिन्तक होइ शके, जेने Sceptic कही शकाय । तेने ज्ञाननुं प्रामाण्य मान्य न थी अने तेथी ते कोई मतनुं स्थापन करी शकतो न थी । जयराशिभट्ट आवा चिन्तक छे । आवाज बीजा केटलाक चिन्तक ने अेम लागे छे के लौकिक प्रमाणो थी परम ज्ञाननी प्राप्ति शक्य न थी । माध्यमिको अने श्री हर्ष वगेरे अद्वैत वेदान्ती ओ आ कोटिना चिंतकों छे । ते ओ परम तत्त्व स्वीकारे छे पण तेनुं स्थापन लौकिक प्रमाणो थी शक्य न थी तेवी तेमनी दृढ़ मान्यता छे । तत्त्व जेवुं छे तेवुं लौकिक प्रमाणो थी ज्ञान थई शकतुं न थी अने जेनुं ज्ञात थाय छे तेवुं ते होइ शके नहीं कारण के आ प्रमाणेनी आपसी मान्यताज दोष रहित न थी । परा प्रज्ञा थी तेनो साक्षात्कार थइ शके पण लोकिक रीते ते ज्ञाननी प्राप्ति के अे तत्त्वनुं विवरण शक्य न थी । बीजु बाजुओं जयराशि जेवा तत्त्वोपप्लववादी कोइज ज्ञाननी सत्यता स्वीकारता न थी अने तेथी कोई तत्त्व विषे कशुं कहे वा तैयार न थी ।

वितण्डानो व्यवहार मां उपयोग सामा पक्ष ने फटकारवा माटे, भूडो काढी नाखवा माटेज मोटे भागे थतो होय छे । पोतानी व्यवस्थित रजूआत कर्या सिवाय सामेनो माणस जे बोले तेनुं खंडन करवुं ते वितण्डा । वितण्डानो आज अर्थ न्यायना ग्रंथामां उतरी आव्यो छे । प्रमाणिक पणे वितण्डानो आश्रय लेनार बहु ओछा होवा ने कारणे आ पासुं लगभग भुलाइ गयुं धर्मकीर्ति जेवा बौद्ध नैयायिक अने अकलंक हेमचंद्राचार्य वगेरे जैन नैयायिको वितण्डाने कथानो प्रकार मानना तैयार न थीं कारण के अेक पक्ष ने तेमां कोइ मतज होतो न थी (जुवो वाद न्याय, पृ. ७२; न्याय-विनिश्चय २-२८२-३८४; प्रमाणमीमांसा २–१–३) । चरक संहितामांवाद–(विगृह्य कथा) ना बे प्रकार गणाव्या छे–जल्प अने वितण्डा–प्रतिपक्ष रजू करवामां आवे के न आवे ते अनुसार । अने दूषणमात्र जेवां लक्षणो सहीं रजू करेला अभिप्रायनुं समर्थन करवामां कांइक अंशे मदद रूप थाय छे । सानातनि अे वितण्डाना बे प्रकार मान्य राखेला तेथी विशेष समर्थन मले छे । ते सिवाय वितण्डाना आ पासा अंगे न्याय-ग्रंथोमा भाग्येज कशी सामग्री मले छे ।

पोतानो पक्ष न होवानुं कारण अे पण होइ शाके के कोइ ज्ञाननुं प्रामाण्य सिद्ध करी शकातुं न थी तेथी कोइ तत्त्व विषे वास्तवमां कशुं जाणी शकाय सहीं; अथवा तो परम तत्त्व लौकिक प्रमाणेनी मर्यादानी बहार छे तेथी तेने विषे लौकिक प्रमाणों द्वारा कशुं प्रतिपादन करी शकातुं न थी, अने लौकिक प्रमाणों द्वारा जे ज्ञान प्राप्त थइ शके छे ते तेमने अभ्युपगमो प्रमाणे पण दोष रहित छे अेम तो न ज कहेवाय । साम पोतानो पक्ष न होवानुं प्रामाणिक कारण होइ ने केटलाक चिंतकों अे वितण्डा–पद्धतिनो आश्रय लीधो । वितण्डानि आ कक्षानो भाग्येज कोई नैयायिक विचार करयो । नैयायिकों अेनो कोइ पण चर्चा मां बे पक्ष होय, वगेरे वगेरे—अे निश्चित चोक्का मां रही ने ज विवेचन करयुं अने वाद प्रकारनी वीतरागनी वितण्डा स्वीकारनारनो अवाज आधोंघाटमां डुली गयो । तेम छतां तत्त्वोपप्लवसिंह जेवा ग्रंथोनी पद्धति समजवामां अने तेमना कर्तानुं मूल्यांकन करवामां आ मदद रूप थाय छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org